प्रश्न - संस्कृति क्या है ? शिक्षा और संस्कृति के सम्बन्ध का वर्णन कीजिए।

उत्तर - भूमिका - प्रत्येक बच्चे का जन्म दोहरी विरासत के साथ होता है - जैविक और सांस्कृतिक। अपनी जैविक विरासत से उसे अपनी शारीरिक विशेषताएँ मानसिक क्षमता और आधारभूत आवश्यकताएँ प्राप्त होती हैं। उसे अपनी सांस्कृतिक विरासत, उस समाज से प्राप्त होती है जिसमें उसका जन्म और लालन-पालन होता है। बालक की शिक्षा में उसकी सांस्कृतिक विरासत का उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है जितना कि उसकी जैविकीय विरासत का।

संस्कृति का अर्थ :—

हिन्दी का 'संस्कृति' शब्द संस्कृत धातु के 'सम' से बना है जिसका अर्थ होता है समानता। जो समान व्यवहार का ढंग एक समुदाय या समूह अपनाता है या दिखलाता है, वही संस्कृति होता है। संस्कृति शब्द का सम्बन्ध 'साधर' से भी है, जिसका अर्थ होता है — सभ्य बनाना, उत्तम व्यवहार करने वाला व्यक्ति। जो व्यक्ति धर्म सदाचार, नैतिकता, नम्रता इस प्रकार की पसन्द रखता था उसको संस्कृत व्यक्ति कहा जाता था। साधर शब्द का विपरीत होता था - 'राक्षस' अर्थात वह व्यक्ति जो सभ्य न हो जिसका व्यवहार अनैतिक, असंस्कृत, धार्मिक व निन्दनीय हो। संक्षेप में, किसी समुदाय या समाज के रहने सहने के समग्र तरीकों या जीवन विधि को संस्कृति कहते हैं। इसमें धर्म कला दर्शन विज्ञान आचार - विचार, रीति-रिवाज, रहन-सहन, भाषा, वेशभूषा, खान-पान

मशीनें उपकरण राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था आदि सभी तत्व सम्मिलित हैं जो जन्म लेने के पश्चात् लौकिक एवं अलौकिक क्षेत्र में मानव जो भी सीखता है उससे संस्कृति का निर्माण होता है।

White के अनुसार, "संस्कृति एक प्रतीकात्मक, निरन्तर, संचयी और प्रगतिशील प्रक्रिया है।"

Linton (लिंटन) के अनुसार, "संस्कृति एक समुदाय के लोगों का सम्पूर्ण ज्ञान, दृष्टिकोण और आदतन व्यवहार होती है।"

संस्कृति में निम्न तत्व होते हैं—

1. मूल्य 2. रीति रिवाज 3. भाषा या बोली
4. आदर्श 5. विचार 6. विश्वास
7. अर्थव्यवस्था 8. नैतिकता 9. आचार संहिता
10. पुरस्कार 11. दण्ड प्रदान की व्यवस्था
12. दृष्टिकोण 13. समस्याओं को हल करने के साधन।
14. मानव द्वारा बनाया गया ज्ञान, साहित्य, विज्ञान।
15. व्यवहार करने की अपनी सामान्य शैली

शिक्षा व संस्कृति का सम्बन्ध— शिक्षा और संस्कृति का आपस में घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। इस सम्बन्ध में ब्रामेल्ड का कथन है "संस्कृति की सामग्री से ही शिक्षा का प्रत्यक्ष रूप से निर्माण होता है और यही सामग्री शिक्षा को न केवल उसके स्वयं के उपकरण वरन उसके अस्तित्व का कारण

भी प्रदान करती है।" शिक्षा अपनी रूपरेखा का निर्माण समाज की संस्कृति के अनुसार ही करती है और संस्कृति का निर्माण समाज के उपकरणों, विचारों और मूल्यों के आधार पर ही होता है। यदि किसी समाज की संस्कृति में आध्यात्मिक मूल्यों पर ही विशेष बल दिया जाता है। इसके साथ-साथ किसी समाज की संस्कृति का संरक्षण शिक्षा के माध्यम से ही होता है। इस प्रकार संस्कृति शिक्षा को और शिक्षा संस्कृति को प्रभावित करते हैं। संस्कृति पर शिक्षा के प्रभाव को निम्नलिखित बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता है —

1. शिक्षा संस्कृति का संरक्षण करती है — शिक्षा के माध्यम से किसी समाज की संस्कृति सुरक्षित रहती है, जीवित रहती है। किसी समाज की संस्कृति युग-युग की साधना का परिणाम होती है इसलिए उस समाज का उससे बहुत लगाव हो जाता है और वह उसे सुरक्षित रखना चाहता है तथा यह काम शिक्षा के औपचारिक, अनौपचारिक व निरौपचारिक साधनों के द्वारा ही किया जाता है।

2. शिक्षा संस्कृति का हस्तान्तरण करती है — शिक्षा विद्यालयों में आयोजित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से समाज की युवा पीढ़ी को संस्कृति का हस्तान्तरण करती है। कला, संगीत, भाषा, दर्शन इन सबका ज्ञान विद्यालय में ही प्राप्त किया जा सकता है और ये तत्व संस्कृति के मेरूदण्ड हैं। शिक्षक शिक्षा के माध्यम से ही नई पीढ़ी में संस्कृति का प्रसार करता है।

3. शिक्षा संस्कृति का विकास करती है — शिक्षा का कार्य केवल संस्कृति का संरक्षण व हस्तान्तरण करना ही नहीं वरन् उसका विकास करना भी है। समाज में

Scanned with CamScanner

निरन्तर परिवर्तन होते रहने के कारण यह निरन्तर विकास की ओर गतिमान रहता है। इसी दिशा में शिक्षा का भी यह कार्य है कि वह संस्कृति में भी उचित परिवर्तन लाये और इसे विकास की ओर उन्मुख करे। शिक्षा के सृजनात्मक कार्यों के कारण ही संस्कृति का विकास होता है।

4. व्यक्तित्व के विकास में सहायता देना — बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अतः इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शिक्षा संस्कृति के उपकरणों जैसे — भाषा, साहित्य, कला, संगीत, दर्शन आदि का सहारा लेती है व इससे व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है।

5. सांस्कृतिक उदारता का विकास करना — संसार में हर समाज की अपनी-अपनी संस्कृति है जिसे वे सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। जिससे कभी-कभी टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है अतः इस टकराव से बचने के लिए सांस्कृतिक उदारता की आवश्यकता है। इसमें भी शिक्षा ही सहायक होती है। शिक्षा द्वारा छात्रों को भिन्न-भिन्न संस्कृतियों की भिन्न-भिन्न विशेषताओं से परिचित कराया जाता है तथा हर संस्कृति के प्रति उदार भावना पैदा करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शिक्षा व संस्कृति में अभिन्न सम्बन्ध है। तथा दोनों ही समग्र मानव संस्कृति का अभिन्न अंग होती है।

6. संस्कृति व शिक्षार्थी — संस्कृति शिक्षार्थी के व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। मनोविज्ञान के बढ़ते प्रभाव के कारण आज विद्यार्थी को शिक्षा व्यवस्था में

केन्द्रीय स्थान दिया गया है। विभिन्न संस्कृतियों में रिवाजों की स्थिति भिन्न-भिन्न है। विद्यालयों में शिक्षकों का मार्गदर्शन इतना उत्तम होना चाहिए कि विभिन्न संस्कृतियों में पले बालकों में आपस में द्वेष व कटुता न पैदा हो जाए।

निष्कर्ष :— उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि संस्कृति में वे सभी बातें समाहित हैं जिनका अस्तित्व है और था। साथ ही उनका भी अस्तित्व रहेगा जो मानव के लिए महत्वपूर्ण है। वास्तव में किसी समाज की शिक्षा व्यवस्था के निर्माण का आधार उसकी जीवन-शैली व संस्कृति ही होती है। जिस समाज की संस्कृति की गति मन्द होती है वहाँ की शिक्षा परम्परागत होती है। जिस समाज की संस्कृति तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करती है वहाँ की शिक्षा भी विकासवादी होती है।

प्रश्न – प्राचीन भारत में शिक्षा के कौन-कौन से मुख्य उद्देश्य थे? वर्णन कीजिए।

उत्तर – भूमिका — प्राचीन शिक्षा का उदय वेदों से हुआ है। चारों वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद ही भारतीय जीवन दर्शन के स्रोत माने गये हैं। इनमें ऋग्वेद को आदि वेद के रूप में स्वीकार किया गया है जो मुख्यतः ज्ञान काण्ड की व्याख्या करता है। ऋग्वेद में मनुष्य जीवन के चारों आश्रमों – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास का विस्तार से वर्णन किया गया है।

वैदिक काल में जीवन की दो प्रकार की विद्या – परा व अपरा में विभक्त किया गया था। 'परा' का अर्थ ज्ञान, मनन और उपासना द्वारा ब्रह्म सत्य ज्ञात मिथ्या' और 'मोक्ष प्राप्त' तथा अपरा का अर्थ सामान्य शिक्षा अर्थात उसके लौकिक स्वरूप से था। परन्तु इसमें अधिक बल परा विद्या पर दिया जाता था क्योंकि धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष भारतीय जीवन के प्रमुख स्तम्भ थे।

शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श — डॉ० अल्तेकर के शब्दों में " ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार प्राचीन भारत में शिक्षा के मुख्य उद्देश्य एवं आदर्श थे। वैदिककाल में समाज एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्यपालन और राष्ट्रीय संस्कृति के विकास पर भी इस काल में विशेष बल दिया गया। इस काल के उद्देश्यों को हम निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध

कर सकते हैं —

1. ज्ञान एवं संस्कृति पर बल
2. विकृतियों का विरोध
3. स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन
4. धार्मिक व पवित्र भावना का विकास
5. चरित्र निर्माण
6. व्यक्तित्व का विकास
7. नागरिक व सामाजिक कर्तव्यों का पालन
8. सामाजिक कुशलता की उन्नति
9. राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण व प्रसार करना।
10. ईश्वर भक्ति व उपासना पर बल।

1. ज्ञान एवं संस्कृति पर बल — ज्ञान का विकास वैदिककालीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य था। तब ज्ञान को मनुष्य का तीसरा नेत्र भी माना जाता था और यह माना जाता था कि यह ज्ञान रूपी तीसरा नेत्र ही हमें दृश्य व सूक्ष्म दोनों जगत का ज्ञान कराता है। सत्य – असत्य करणीय तथा अकरणीय कर्मों का भेद स्पष्ट करता है। इस प्रकार वैदिक काल में शिष्यों के भौतिक विकास हेतु उन्हें भाषा, व्याकरण, कृषि, पशुपालन व कला कौशलों की शिक्षा देने के साथ ही उसे सामाजिक क्रियाओं में भी प्रशिक्षित किया जाता था। आध्यात्मिक विकास हेतु भाषा साहित्य, धर्म और नीतिशास्त्र का ज्ञान कराया जाता था

2- चित्तवृत्तियों का निरोध — वैदिक काल में शरीर की अपेक्षा आत्मा को बहुत अधिक महत्व दिया जाता था क्योंकि शरीर नश्वर है जबकि आत्मा अनश्वर है। अतः विद्यार्थियों की चित्तवृत्तियों का निरोध करने हेतु योग पर विशेष बल दिया जाता था तथा उन्हें विभिन्न प्रकार के अभ्यासों द्वारा अपनी चित्तवृत्तियों के निरोध हेतु प्रोत्साहित किया जाता था। अतः इस काल में शिक्षा का उद्देश्य मन से उन सब वृत्तियों का निरोध था, जिसके कारण नर इस भौतिक संसार में उलझ जाता था।

3. स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन — वैदिककालीन ऋषि और गुरु मानव जीवन के अन्तिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति हेतु स्वस्थ शरीर व निर्मल मन की आवश्यकता पर बल देते थे। यही कारण था कि ऋषि आश्रमों और गुरुकुलों में शिष्यों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण व संवर्धन पर विशेष बल दिया जाता था। उन्हें इस हेतु उचित आहार-विहार और आचार-विचार की शिक्षा दी जाती थी। उन्हें सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के पालन करने और काम, क्रोध, लोभ, मोह और मद से दूर रहने की शिक्षा दी जाती थी।

4. पालन व पवित्र भावना का विकास — वैदिक काल में शिक्षा मानव को उसके आत्मिक विकास की ओर ले जाती थी। मानव का जीवन बहुत सरल, स्वाभाविक, शुद्ध तथा पवित्र था। सत्य ही उनका मोक्ष की प्राप्ति जीवन का लक्ष्य था। अतः मनुष्य की ईश्वर में पूर्ण आस्था थी। समाज में धर्म प्रधान था तथा धर्म ही ईश्वर की प्राप्ति का साधन था।

5. चरित्र निर्माण — वैदिक कालीन शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का चरित्र निर्माण करना था। चरित्र का निर्माण वैदिक आदर्शों के अनुरूप किया जाता था। ब्रह्मचर्य का पालन, सात्विक भोजन, सदाचार व उच्च विचार आदि का पालन करके इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती थी।

6. व्यक्तित्व का विकास — इस काल में छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है जिससे उनमें आत्मविश्वास, अपने को जानना, आत्मसम्मान तथा आत्मानुभूति आदि गुणों का विकास किया जाता था। इसके लिए छात्रों को पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान की जाती थी, ताकि वे अपने विवेक का प्रयोग कर स्वयं को पहचान सके।

7. नागरिक व सामाजिक कर्तव्यों का पालन — वैदिक काल में छात्रों में आदर्श नागरिक बनने की व आत्मकेन्द्रित जीवन की भावना का विकास किया जाता था। ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् गृहस्थ पालन के कर्तव्यों का ज्ञान दिया जाता था ताकि छात्र समाज में प्रवेश करके अपना जीवन सुखी बना सके, परिवार के सदस्यों का उत्तरदायित्व समझ सके। सेवा सम्बन्धी कार्य जैसे — स्त्री, बच्चों व बूढ़ों की सेवा, दलित समाज सेवा, पितृ व गुरु सेवा, गौ सेवा, अतिथि सत्कार, दीन-दुखियों की सहायता आदि छात्रों की दिनचर्या में सम्मिलित रहते थे।

8. सामाजिक कुशलता की ~~[illegible]~~ उन्नति — इस काल में गुरुकुलों के अन्तर्गत छात्रों को जीविकोपार्जन सम्बन्धी व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता था, ताकि वे अपने भावी जीवन को सुचारु रूप से चलाने में समर्थ हो सकें। इसलिए वे विभिन्न व्यवसायों में व अपने पैतृक व्यवसाय में कुशलता प्राप्त करते थे।

Scanned with CamScanner

(9) राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण व प्रसार करना — यह वैदिककालीन या प्राचीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य माना जाता था। छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृति से परिचित कराया जाता था ताकि वे उसके संरक्षण में सहायक हो सकें। इस कार्य को केवल उच्च कोटि के शिक्षक ही सम्पन्न कर पाते थे। उनके द्वारा इसी ध्येय से छात्रों में स्वाध्याय की आदत पड़ जाती थी।

10- ईश्वर भक्ति व उपासना पर बल — छात्रों में ईश्वर भक्ति और धार्मिकता की भावना का समावेश कराने का प्रयास किया जाता था व इसी हेतु संसार से व्यक्ति की मुक्ति पर बल दिया जाता था। अतः सभी प्रकार की शिक्षाओं का प्रमुख उद्देश्य छात्र को समाज का धार्मिक सदस्य बनाना था।

निष्कर्ष — उपरोक्त विवरण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वैदिककालीन अथवा वैदिक शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, नैतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के विकास द्वारा मोक्ष प्राप्त करना था। प्राचीन शिक्षा के इन उद्देश्यों की प्राप्ति का तात्पर्य वास्तविक मनुष्य अथवा मनुष्य को पूर्ण बनाना रहा है। आत्मज्ञान तथा ब्रह्मज्ञान के लिये छात्रों को तैयार किया जाता था ताकि शिक्षा से उनका लौकिक व पारलौकिक विकास हो सके।

प्रश्न – तकनीकी सशक्तीकरण में शिक्षा की भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर – भूमिका — शिक्षा मानव के जन्म के साथ आरम्भ हो जाती है, ~~प्रत्य~~ और मनुष्य की मृत्यु तक चलती रहती है। इस प्रकार शिक्षा की विशेष अवधि नहीं होती। यह तो जीवन पर्यन्त चलती रहती है शिक्षा ही मानव में निहित शक्तियों का विकास करती है। यह मानव के व्यवहार में पूरी तरह से परिवर्तन लेकर आती है। यदि मानव शिक्षा को अर्जित नहीं करता तो उसे सामाजिकता का ज्ञान नहीं होता। अतः शिक्षा ही मानव में सामाजिकता चेतना का विकास करती है।

ड्रमवेल के अनुसार " शिक्षा व्यक्ति में ज्ञान का पुंज है।"

फ्रोबेल के अनुसार " शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक की आन्तरिक शक्तियों को बाहर लाया जाता है।"

तकनीकी का अर्थ – विज्ञान जगत में तकनीकी को नव-निर्माण से जोड़ा जाता है तकनीकी माध्यम से व्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयोग करता है जिनकी सहायता से मानव किसी भी कार्य को करने में पूरी तरह से कुशल हो जाता है।

एस. के. मिश्रा के अनुसार " वैज्ञानिक ज्ञान का व्यवहारात्मक रूप ही तकनीकी है।"

इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि जब मानव अपने जीवन में कला का प्रयोग करते हुए नवीन ज्ञान की प्राप्ति ही तकनीकी है, यह वैज्ञानिक ज्ञान का आधार है।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक तकनीकी का अर्थ – शैक्षिक तकनीकी का अर्थ है शिक्षा में तकनीकी। यह दो शब्दों से मिलकर बना है – शिक्षा + तकनीकी। जब शिक्षा में नवीन ज्ञान नवीन प्रणाली एवं नवीन कौशलों का प्रयोग करना ही शैक्षिक तकनीकी है
रॉबर्ट एम. कोमास के अनुसार " मानव की सीखने की परिस्थितियों में वैज्ञानिक प्रक्रिया के प्रयोग को शैक्षिक तकनीकी कहते हैं।"
तकनीकी समावेशीकरण में शिक्षा की भूमिका – तकनीकी समावेशीकरण में शिक्षा की भूमिका निम्नलिखित रूप में दिखायी देती है –

1. शिक्षा शोध को बढ़ावा देती है – तकनीकी समावेशीकरण तभी सफल हो पाता है जब शिक्षा, चिकित्सा, क्षेत्र में नए-नए अनुसंधान हों। तभी तकनीकी समावेशीकरण का मार्ग खुल जाएगा।
2. व्यक्ति की सोच में परिवर्तन करती है – तकनीकी समावेशीकरण तभी सफल हो पाता है जब व्यक्तियों की विचारधारा में पूरी तरह से बदलाव हो। तभी वे नवीन ज्ञान को अपना सकेंगे और रूढ़िवादी विचारधारा से छुटकारा पा सकेंगे।
3. शैक्षिक लक्ष्यों के निर्धारण में – तकनीकी की सहायता से ही शिक्षा के उद्देश्यों किया जा सकता है। क्योंकि समाज की प्रत्येक वस्तु में तीव्र गति के साथ परिवर्तन होता है।
4. शिक्षा बौद्धिक शक्तियों का विकास करती है – शिक्षा व्यक्ति की विचारधारा में ही परिवर्तन नहीं करती बल्कि उनकी तर्क-वितर्क, विचार विश्लेषण की क्षमताओं का भी विकास करती है। जिससे वे विज्ञान के क्षेत्र में

Scanned with CamScanner

कुछ नया करने में व उसका जीवन में उपयोग करने में सक्षम बनाती है।

5. सृजनात्मक शक्ति का विकास – सृजनात्मकता तकनीकी सम्मिलितकरण का मार्ग खोलती है। यह व्यक्ति में भिन्न-भिन्न काम करने की क्षमता का विकास करती है।

6. प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने का कार्य – शैक्षिक तकनीकी के कारण ही आज समस्त संसार का ज्ञान विभिन्न उपकरणों की सहायता से कक्षा-कक्षा में विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है।

7. अनुशासन हीनता को कम करने में सहायक – शैक्षिक तकनीकी के कारण आज विद्यार्थी कक्षा-कक्षा में कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। इनकी सक्रियता एवं उत्सुकता नवीन ज्ञान प्राप्त करने में होती है। अतः अनुशासनहीनता का उन्हें अवसर ही नहीं मिलता। अपितु शैक्षिक तकनीकी के कारण इसका पूरी तरह से निराकरण भी हो जाता है।

8. प्रशिक्षण में सहायक – इसकी सहायता से प्रशिक्षु अध्यापकों को नवीन ज्ञान एवं प्रशिक्षण देने में सहायक होती है। वह एक परिस्थिति में सीखे गए ज्ञान को दूसरी परिस्थिति में पूरी तरह से प्रयोग करके दिखाते है।

9. व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार शिक्षण – समाज में दो व्यक्तियों में भी व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। कक्षा-कक्षा में एक ही स्तर के विद्यार्थी नहीं होते। शैक्षिक तकनीकी की सहायता से विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के अनुकूल सीखते हैं।

(10) शैक्षिक वातावरण को बनाने में सहायक — शैक्षिक तकनीकी के कारण कक्षा-कक्ष का नीरस वातावरण पूरी तरह से सरस वातावरण में बदल जाता है। इसकी सहायता से अध्यापक-विद्यार्थी के मध्य शैक्षिक अन्तःक्रिया पूरी तरह से बढ़ जाती है।

निष्कर्ष :— सार रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा में तकनीकी शिक्षा को अधिक मात्रा में शामिल किया जाए ताकि रूढ़िवादी परम्पराओं से निकलकर आधुनिक दौर में प्रवेश कर सके। इसके लिए हम सभी अर्थात राजनीतिज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, अध्यापकों एवं शिक्षाविदों का कर्तव्य बनता है कि वह भी तकनीकी शिक्षा अपनायें एवं दूसरों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करें।

Scanned with CamScanner